

अथर्ववेद

काण्ड ३

सूक्त २६

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Atharvaveda

Kaanda 3

Sookta 26

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

इस सूक्त में ऋषि लौकिक विद्वानों और प्राकृतिक शक्तियों के द्वारा सभी दिशाओं में प्राणीमात्र के पोषण, रक्षण और उथान के लिए सतत प्रयास करने का उल्लेख करते हैं। सभी वर्णों के द्विज अपने अपने वर्ण में निर्धारित कर्तव्यों की पूर्ति के साथ साथ अपना ज्ञान भी समाज में फैलाते हैं। इसी प्रकार सूर्य, चन्द्र, पर्वत, मेघ, नदी, सागर आदि वातावरण के चक्र को चलाते रहते हैं। यह सब ईश्वर के विधान के अनुसार ही हो रहा है।

प्रथम मन्त्र में ऋषि ब्राह्मणों द्वारा अपने उपदेशों से समाज से आसुरी वृत्तियों के शमन का उल्लेख करते हैं। पूर्व दिशा को ज्ञान का प्रतीक माना गया है।

अथर्वा ऋषिः । साग्नयो हेतयो देवताः । ४२ अक्षराणि । पञ्चपदा विपरीतपादलक्षाः विराडाषीं त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

ये३ः॑स्यां स्थ प्राच्यां दिशि हेतयो नाम देवास्तेषां वो अग्निरिषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ॥१॥

अथर्व ३:६:२६:१

ये । अस्याम् । स्थ । प्राच्याम् । दिशि । हेतयः । नाम । देवाः । तेषाम् । वः । अग्निः । इषवः ॥

ते । नः । मृडत । ते । नः । अधि । ब्रूत । तेभ्यः । वः । नमः । तेभ्यः । वः । स्वाहा ॥१॥

(देवाः) हे दिव्य शक्तियों वाले विद्वानो! (वः) आपमें से (ये) जो (हेतयः) असुरों और आसुरी भावों का नाश करने वाले हेति (नाम) नाम धारण कर हमारे घर व राष्ट्र की (अस्याम्) इस (प्राच्याम्) पूर्व (दिशि) दिशा में (स्थ) स्थित हैं, (तेषाम्) उन सबके (इषवः) शस्त्र (अग्निः) पाप को भस्म और अज्ञान के अन्धकार को दूर करने वाली अग्नि के समान हैं। (ते) वे (नः) हमें (अधि) ईश्वरीय नियमों का (ब्रूत) उपदेश दें। (ते) वे (नः) हमें (मृडत) सुखी करें। (तेभ्यः) उनके लिए और (वः) आप सब के लिए हमारा (नमः) नमन। (तेभ्यः) उनके लिए और (वः) आप के लिए हमारी (स्वाहा) वाणी में प्रशंसा है।

दूसरे मन्त्र में ऋषि क्षत्रियों द्वारा निस्वार्थ भाव से समाज और धर्म की रक्षा का उल्लेख करते हैं।

अथर्वा ऋषिः । सकामा अविष्यवो देवताः । ४४ अक्षराणि । पञ्चपदा विपरीतपादलक्षाः आषीं त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

Synopsis

In this composition the sage highlights the contribution of both scholars as well as the forces of nature, in nourishing, protecting and uplifting all living beings in all directions. The scholars from all *varṇas* apart from fulfilling their duties according to their *varṇa*, are also engaged in spreading their knowledge in the society. Similarly the elements of nature like the Sun, the Moon, mountains, clouds, rivers and oceans etc. keep nature's cycles working relentlessly. All of this happens in accordance with the laws created by God.

In the first mantra the sage describes the role of priests in curbing evil tendencies in the society through their preaching.

ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataaḥ** saagnayo hetayaḥ, **vowels** 42, **chhandah** pañchapadaa vipareetapaadalakṣhaaḥ viraad aarṣhee triṣṭup, **svarah** dhaivataḥ.

**1. ye3syaan stha praachyaan dishi hetayo naama devaasteṣhaam vo
agniriṣhavaḥ,
te no mṛidata te no'dhi broota tebhyo vo namastebhyo vaḥ
svaahaa.**

Atharva 3:6:26:1

ye asyaam stha praachyaam dishi hetayaḥ naama devaaḥ teṣhaam vaḥ agniḥ iṣhavaḥ,
te naḥ mṛidata te naḥ adhi broota tebhyaḥ vaḥ namaḥ tebhyaḥ vaḥ svaahaa.

(devaaḥ) **O scholars possessing divine powers! (ye) Those (vaḥ) amongst you, who are protecting our homes and nation (stha)(asyaam)(praachyaam) from the eastern (dishi) direction and have assumed (naama) the name of (hetayaḥ) “hetī” i.e. the destroyer of evil and evil tendencies, (teṣhaam) their (iṣhavaḥ) weapons are like (agniḥ) the fire that incinerates sins and destroys darkness and ignorance. May (te) they (broota) preach and teach (naḥ) us (adhi) the laws of dharma! May (te) they bring (naḥ) us (mṛidata) happiness! We (namaḥ) bow to (tebhyaḥ) them and (vaḥ) to all of you as well. We (svaahaa) offer our praises (tebhyaḥ) for them and (vaḥ) for all of you as well.**

In the second mantra the sage describes the role of warriors in the protection of the society and in propagation of knowledge.

ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataaḥ** sakaamaa aviṣhyavaḥ, **vowels** 44, **chhandah** pañchapadaa vipareetapaadalakṣhaaḥ aarṣhee triṣṭup, **svarah** dhaivataḥ.

ये३ं॑ ॒स्यां स्थ दक्षि॑णायां दि॒श्यवि॑ष्यवो नाम॑ दे॒वास्तेषां॑ वः काम॑ इष॑वः ।

ते नो॑ मृ॒डत॒ ते नोऽधि॑ ब्रूत॒ तेभ्यो॑ वो नम॑स्तेभ्यो॑ वः स्वाहा॑ ॥२॥

अथर्व ३:६:२६:२

ये । अ॒स्याम् । स्थ । दक्षि॑णायाम् । दि॒शि । अ॒वि॒ष्यवः॑ । नाम॑ । दे॒वाः । तेषा॑म् । वः । कामः॑ । इष॑वः ॥

ते । नः । मृ॒डत॒ । ते । नः । अधि॑ । ब्रूत॒ । तेभ्यः॑ । वः । नमः॑ । तेभ्यः॑ । वः । स्वाहा॑ ॥२॥

(देवाः) हे दिव्य शक्तियों वाले विद्वानो! (वः) आपमें से (ये) जो (अविष्यवः) बिना लालच स्वेच्छा से सबकी रक्षा करने वाले अविष्यु (नाम) नाम धारण कर हमारे घर व राष्ट्र की (अस्याम्) इस (दक्षिणायाम्) दक्षिण (दिशि) दिशा में (स्थ) स्थित हैं, (कामः) समाज की उन्नति की प्रबल इच्छा ही (तेषाम्) उन सबके (इषवः) शस्त्र हैं । (ते) वे (नः) हमें (अधि) ईश्वरीय नियमों का (ब्रूत) उपदेश दें । (ते) वे (नः) हमें (मृडत) सुखी करें । (तेभ्यः) उनके लिए और (वः) आप सब के लिए हमारा (नमः) नमन । (तेभ्यः) उनके लिए और (वः) आप के लिए हमारी (स्वाहा) वाणी में प्रशंसा है ।

तीसरे मन्त्र में ऋषि वैश्यों द्वारा समाज के भरण पोषण का उल्लेख करते हैं ।

अथर्वा ऋषिः । अव्युक्ता वैराजो देवताः । ४३ अक्षराणि । पञ्चपदा विपरीतपादलक्षाः निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

ये३ं॑ ॒स्यां स्थ प्र॒तीच्यां॑ दि॒शि वैरा॑जा नाम॑ दे॒वास्तेषां॑ वः आप॑ इष॑वः ।

ते नो॑ मृ॒डत॒ ते नोऽधि॑ ब्रूत॒ तेभ्यो॑ वो नम॑स्तेभ्यो॑ वः स्वाहा॑ ॥३॥

अथर्व ३:६:२६:३

ये । अ॒स्याम् । स्थ । प्र॒तीच्या॑म् । दि॒शि । वैरा॑जाः । नाम॑ । दे॒वाः । तेषा॑म् । वः । आपः॑ । इष॑वः ॥

ते । नः । मृ॒डत॒ । ते । नः । अधि॑ । ब्रूत॒ । तेभ्यः॑ । वः । नमः॑ । तेभ्यः॑ । वः । स्वाहा॑ ॥३॥

(देवाः) हे दिव्य शक्तियों वाले विद्वानो! (वः) आपमें से (ये) जो (वैराजाः) समाज के पोषण के लिए अन्न प्रदान करने वाले वैराज (नाम) नाम धारण कर हमारे घर व राष्ट्र की (अस्याम्) इस (प्रतीच्याम्) पश्चिम (दिशि) दिशा में (स्थ) स्थित हैं, (आपः) जल के स्रोत ही (तेषाम्) उन सबके (इषवः) शस्त्र हैं । (ते) वे (नः) हमें (अधि) ईश्वरीय नियमों का (ब्रूत) उपदेश दें । (ते) वे (नः) हमें (मृडत) सुखी करें । (तेभ्यः) उनके लिए और (वः) आप सब के लिए हमारा (नमः) नमन । (तेभ्यः) उनके लिए और (वः) आप के लिए हमारी (स्वाहा) वाणी में प्रशंसा है ।

चौथे मन्त्र में ऋषि पर्वतों, मेघों और वायु के सामजस्य से बने वातावरण के चक्रों का उल्लेख करते हैं ।

2. **ye3syaan stha dakṣhiṇaayaan dishyaviṣhyavo naama devaasteṣhaam
vaḥ kaama iṣhavaḥ,
te no mṛṛdata te no'dhi broota tebhyo vo namastebhyo vaḥ
svaahaa.**

Atharva 3:6:26:2

ye asyaam stha dakṣhiṇaayaan dishi aviṣhyavaḥ naama devaah teṣhaam vaḥ kaamaḥ iṣhavaḥ,
te naḥ mṛṛdata te naḥ adhi broota tebhyah vaḥ namaḥ tebhyah vaḥ svaahaa.

(devaah) **O scholars possessing divine powers! (ye) Those (vaḥ) amongst you, who are protecting our homes and nation (stha)(asyaam)(dakṣhiṇaayaan) from the southern (dishi) direction and have assumed (naama) the name of (aviṣhyavaḥ) "aviṣhyu" i.e. the one who volunteers to protect everyone without expecting anything in return, (teṣhaam) their (iṣhavaḥ) weapons are (kaamaḥ) their strong desires to see the society progress. May (te) they (broota) preach and teach (naḥ) us (adhi) the laws of dharma! May (te) they bring (naḥ) us (mṛṛdata) happiness! We (namaḥ) bow to (tebhyah) them and (vaḥ) to all of you as well. We (svaahaa) offer our praises (tebhyah) for them and (vaḥ) for all of you as well.**

In the third mantra the sage describes the role of merchants and farmers in the nourishment of the society and in propagation of knowledge.

riṣhiḥ atharvaa, **devataah** avyuktaa vairaajaḥ, **vowels** 43, **chhandah** pañchapadaa vipareetapaadalakṣhaah nichṛid aarṣhee triṣṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

3. **ye3syaan stha prateechyaan dishi vairaajaa naama devaasteṣhaam vaḥ
aapa iṣhavaḥ,
te no mṛṛdata te no'dhi broota tebhyo vo namastebhyo vaḥ
svaahaa.**

Atharva 3:6:26:3

ye asyaam stha prateechyaam dishi vairaajaah naama devaah teṣhaam vaḥ aapaḥ iṣhavaḥ,
te naḥ mṛṛdata te naḥ adhi broota tebhyah vaḥ namaḥ tebhyah vaḥ svaahaa.

(devaah) **O scholars possessing divine powers! (ye) Those (vaḥ) amongst you, who are protecting our homes and nation (stha)(asyaam)(prateechyaam) from the western (dishi) direction and have assumed (naama) the name of (vairaajaah) "vairaaja" i.e. the providers of grains for everyone's nourishment, (teṣhaam) their (iṣhavaḥ) weapons are (aapaḥ) the sources of water. May (te) they (broota) preach and teach (naḥ) us (adhi) the laws of dharma! May (te) they bring (naḥ) us (mṛṛdata) happiness! We (namaḥ) bow to (tebhyah) them and (vaḥ) to all of you as well. We (svaahaa) offer our praises (tebhyah) for them and (vaḥ) for all of you as well.**

In the fourth mantra the sage describes the role of mountains, clouds and air in maintaining the cycles of nature.

अथर्वा ऋषिः । सवाताः प्रविध्यन्तो देवताः । ४३ अक्षराणि । पञ्चपदा विपरीतपादलक्षाः निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

ये३ ॐ ॒स्यां स्थोदी॑च्यां दि॒शि प्र॒विध्यन्तो॑ नाम॑ दे॒वास्तेषां॑ वो॒ वात॒ इष॑वः ।

ते नो॑ मृडत॒ ते नोऽधि॑ ब्रूत॒ तेभ्यो॑ वो॒ नम॒स्तेभ्यो॑ वः॒ स्वाहा॑ ॥४॥

अथर्व ३:६:२६:४

ये । अ॒स्याम् । स्थ । उदी॑च्याम् । दि॒शि । प्र॒विध्यन्तः॑ । नाम॑ । दे॒वाः । तेषा॑म् । वः । वातः॑ । इष॑वः ॥

ते । नः॑ । मृ॒डत॒ । ते । नः॑ । अधि॑ । ब्रू॒त । तेभ्यः॑ । वः । नमः॑ । तेभ्यः॑ । वः । स्वाहा॑ ॥४॥

(देवाः) हे दिव्य गुणों वाली प्राकृतिक शक्तियों! (वः) आपमें से (ये) जो (तेषाम्) मेघादि (वातः) वायु के बहाव का (इषवः) प्रयोग कर, (प्रविध्यन्तः) वर्षा और विद्युत से संसार से भूख प्यास आदि दुःखों का विनाश करने वाले प्रविध्यन् (नाम) नाम धारण कर हमारे घर व राष्ट्र की (अस्याम्) इस (उदीच्याम्) उत्तर (दिशि) दिशा में (स्थ) स्थित हैं । (ते) वे (नः) हमें (अधि) प्राकृतिक चक्रों के नियमों का (ब्रूत) भान कराएं । (ते) वे (नः) हमें (मृडत) सुखी करें । (तेभ्यः) उनके लिए और (वः) आप सब के लिए हमारा (नमः) नमन । (तेभ्यः) उनके लिए और (वः) आप के लिए हमारी (स्वाहा) वाणी में प्रशंसा है ।

पाँचवे मन्त्र में ऋषि नदियों के जीवनदायी व रोगनाशी स्वरूप का उल्लेख करते हैं ।

अथर्वा ऋषिः । सौषधिका निलिम्पा देवताः । ४४ अक्षराणि । पञ्चपदा विपरीतपादलक्षाः आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

ये३ ॐ ॒स्यां स्थ ध्रु॒वायां॑ दि॒शि नि॒लिम्पा॑ नाम॑ दे॒वास्तेषां॑ व॒ ओष॑धी॒रिष॑वः ।

ते नो॑ मृडत॒ ते नोऽधि॑ ब्रूत॒ तेभ्यो॑ वो॒ नम॒स्तेभ्यो॑ वः॒ स्वाहा॑ ॥५॥

अथर्व ३:६:२६:५

ये । अ॒स्याम् । स्थ । ध्रु॒वायां॑ । दि॒शि । नि॒लिम्पाः॑ । नाम॑ । दे॒वाः । तेषा॑म् । वः । ओष॑धीः । इष॑वः ॥

ते । नः॑ । मृ॒डत॒ । ते । नः॑ । अधि॑ । ब्रू॒त । तेभ्यः॑ । वः । नमः॑ । तेभ्यः॑ । वः । स्वाहा॑ ॥५॥

(देवाः) हे दिव्य गुणों वाली प्राकृतिक शक्तियों! (वः) आपमें से (ये) जो (तेषाम्) नदी आदि, (ओषधीः) ओषधियों के (इषवः) द्वारा, (निलिम्पाः) संसार के रोगों का विनाश करने वाली गंगा आदि (नाम) नाम धारण कर हमारे घर व राष्ट्र की (अस्याम्) इस (ध्रुवायाम्) निचली (दिशि) दिशा में (स्थ) स्थित हैं । (ते) वे (नः) हमें (अधि) प्राकृतिक चक्रों के नियमों का (ब्रूत) भान कराएं । (ते) वे (नः) हमें (मृडत) सुखी करें । (तेभ्यः) उनके लिए और (वः) आप सब के लिए हमारा (नमः) नमन । (तेभ्यः) उनके लिए और (वः) आप के लिए हमारी (स्वाहा) वाणी में प्रशंसा है ।

riṣhiḥ atharvaa, **devataaḥ** savaataaḥ pravidhyantaḥ, **vowels** 43, **chhandah** pañchapadaa vipareetapaadalakṣhaaḥ nichṛid aarṣhee triṣṭup, **svarah** dhaivataḥ.

**4. ye3syaan sthodeechyaan dishi pravidhyanto naama devaasteṣhaam vo
vaata iṣhavaḥ,
te no mṛidata te no'dhi broota tebhyo vo namastebhyo vaḥ
svaahaa.**

Atharva 3:6:26:4

ye asyaam stha udeechyaam dishi pra-vidhyantaḥ naama devaaḥ teṣhaam vaḥ vaataḥ iṣhavaḥ,
te naḥ mṛidata te naḥ adhi broota tebhyaḥ vaḥ namaḥ tebhyaḥ vaḥ svaahaa.

(devaaḥ) **O Divine forces of Mother Nature! (ye) Those (vaḥ) amongst you, who are (teṣhaam)(iṣhavaḥ) using (vaataḥ) the flow of air and are protecting us (stha)(asyaam)(udeechyaam) from the northern (dishi) direction by assuming (naama) the name of (pra-vidhyantaḥ) “pravidhyan” i.e. the cloud etc. who destroy the thirst and hunger by providing rain and thunder. May (te) they (broota) educate (naḥ) us (adhi) about the laws of nature’s cycles! May (te) they bring (naḥ) us (mṛidata) happiness! We (namaḥ) bow to (tebhyaḥ) them and (vaḥ) to all of you as well. We (svaahaa) offer our praises (tebhyaḥ) for them and (vaḥ) for all of you as well.**

In the fifth mantra the sage describes the role of water bodies in maintaining the cycles of nature.

riṣhiḥ atharvaa, **devataaḥ** sauṣhadhikaa nilimpaah, **vowels** 44, **chhandah** pañchapadaa vipareetapaadalakṣhaaḥ aarṣhee triṣṭup, **svarah** dhaivataḥ.

**5. ye3syaan stha dhruvaayaan dishi nilimpaa naama devaasteṣhaam va
oṣhadheeriṣhavaḥ,
te no mṛidata te no'dhi broota tebhyo vo namastebhyo vaḥ
svaahaa.**

Atharva 3:6:26:5

ye asyaam stha dhruvaayaam dishi ni-limpaah naama devaaḥ teṣhaam vaḥ oṣhadheeh iṣhavaḥ,
te naḥ mṛidata te naḥ adhi broota tebhyaḥ vaḥ namaḥ tebhyaḥ vaḥ svaahaa.

(devaaḥ) **O Divine forces of Mother Nature! (ye) Those (vaḥ) amongst you, who are protecting us (stha)(asyaam)(dhruvaayaam) from the lower (dishi) direction (teṣhaam)(iṣhavaḥ) through (oṣhadheeh) the medicinal herbs and by assuming (naama) the names of (ni-limpaah) Ganges etc. i.e. the rivers that destroy the sicknesses and sorrows. May (te) they (broota) educate (naḥ) us (adhi) about the laws of natural cycles! May (te) they bring (naḥ) us (mṛidata) happiness! We (namaḥ) bow to (tebhyaḥ) them and (vaḥ) to all of you as well. We (svaahaa) offer our praises (tebhyaḥ) for them and (vaḥ) for all of you as well.**

छठे मन्त्र में ऋषि सूर्य चन्द्रादि के प्रकाश के महत्त्व का उल्लेख करते हैं।

अथर्वा ऋषिः । बृहस्पतियुक्ता अवस्वन्तो देवताः । ४४ अक्षराणि । पञ्चपदा विपरीतपादलक्षाः आर्षी
त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

ये३' ुस्यां स्थोर्ध्वायां दिश्यवस्वन्तो नाम देवास्तेषां वो बृहस्पतिरिषवः ।

ते नो' मृडत ते नोऽधि' ब्रूत तेभ्यो' वो नमस्तेभ्यो' वः स्वाहा' ॥६॥

अथर्व ३:६:२६:६

ये । अस्याम् । स्थ । ऊर्ध्वायाम् । दिशि । अवस्वन्तः । नाम । देवाः । तेषाम् । वः । बृहस्पतिः । इषवः ॥

ते । नः । मृडत । ते । नः । अधि । ब्रूत । तेभ्यः । वः । नमः । तेभ्यः । वः । स्वाहा ॥६॥

(देवाः) हे दिव्य गुणों वाली प्राकृतिक शक्तियों! (वः) आपमें से (ये) जो (तेषाम्) सूर्य चन्द्रादि,
(बृहस्पतिः) सम्पूर्ण ज्ञान के स्वामी परमेश्वर (इषवः) की प्रेरणा से, (अवस्वन्तः) प्रकाश द्वारा सबकी
रक्षा करने वाले अवस्वान् (नाम) नाम धारण कर हमारे घर व राष्ट्र की (अस्याम्) इस (ऊर्ध्वायाम्)
ऊपरी (दिशि) दिशा में (स्थ) स्थित हैं । (ते) वे (नः) हमें (अधि) प्राकृतिक चक्रों के नियमों का (ब्रूत)
भान कराएं । (ते) वे (नः) हमें (मृडत) सुखी करें । (तेभ्यः) उनके लिए और (वः) आप सब के लिए
हमारा (नमः) नमन । (तेभ्यः) उनके लिए और (वः) आप के लिए हमारी (स्वाहा) वाणी में प्रशंसा
है ।

In the sixth mantra the sage describes the role of the Sun and the Moon in maintaining the cycles of nature.

ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataaḥ** bṛihaspatiyuktaa avasvantaḥ, **vowels** 44, **chhandah** pañchapadaa vipareetapaadalakṣhaaḥ aarṣhee triṣṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

**6. ye3syaan sthordhvaayaan dishyavasvanto naama devasteṣhaam vo
bṛihaspatiriṣhavaḥ,
te no mṛidata te no'dhi broota tebhyo vo namastebhyo vaḥ
svaahaa.**

Atharva 3:6:26:6

ye asyaam stha oordhvaayaam dishi avasvantaḥ naama devaaḥ teṣhaam vaḥ bṛihaspatiḥ iṣhavaḥ,
te naḥ mṛidata te naḥ adhi broota tebhyaḥ vaḥ namaḥ tebhyaḥ vaḥ svaahaa.

(devaaḥ) **O Divine forces of Mother Nature!** (ye) **Those** (vaḥ) **amongst you, who are protecting us** (stha)(asyaam)(oordhvaayaam) **from the upper** (dishi) **direction** (teṣhaam)(iṣhavaḥ) **armed with the inspiration from** (bṛihaspatiḥ) **the lord of illuminating knowledge and by assuming** (naama) **the names of** (avasvantaḥ) **“avasvaan” i.e. those like Sun and Moon who protect everyone with their light. May** (te) **they** (broota) **educate** (naḥ) **us** (adhi) **about the laws of natural cycles! May** (te) **they bring** (naḥ) **us** (mṛidata) **happiness! We** (namaḥ) **bow to** (tebhyaḥ) **them and** (vaḥ) **to all of you as well. We** (svaahaa) **offer our praises** (tebhyaḥ) **for them and** (vaḥ) **for all of you as well.**